पांचवी पांडव

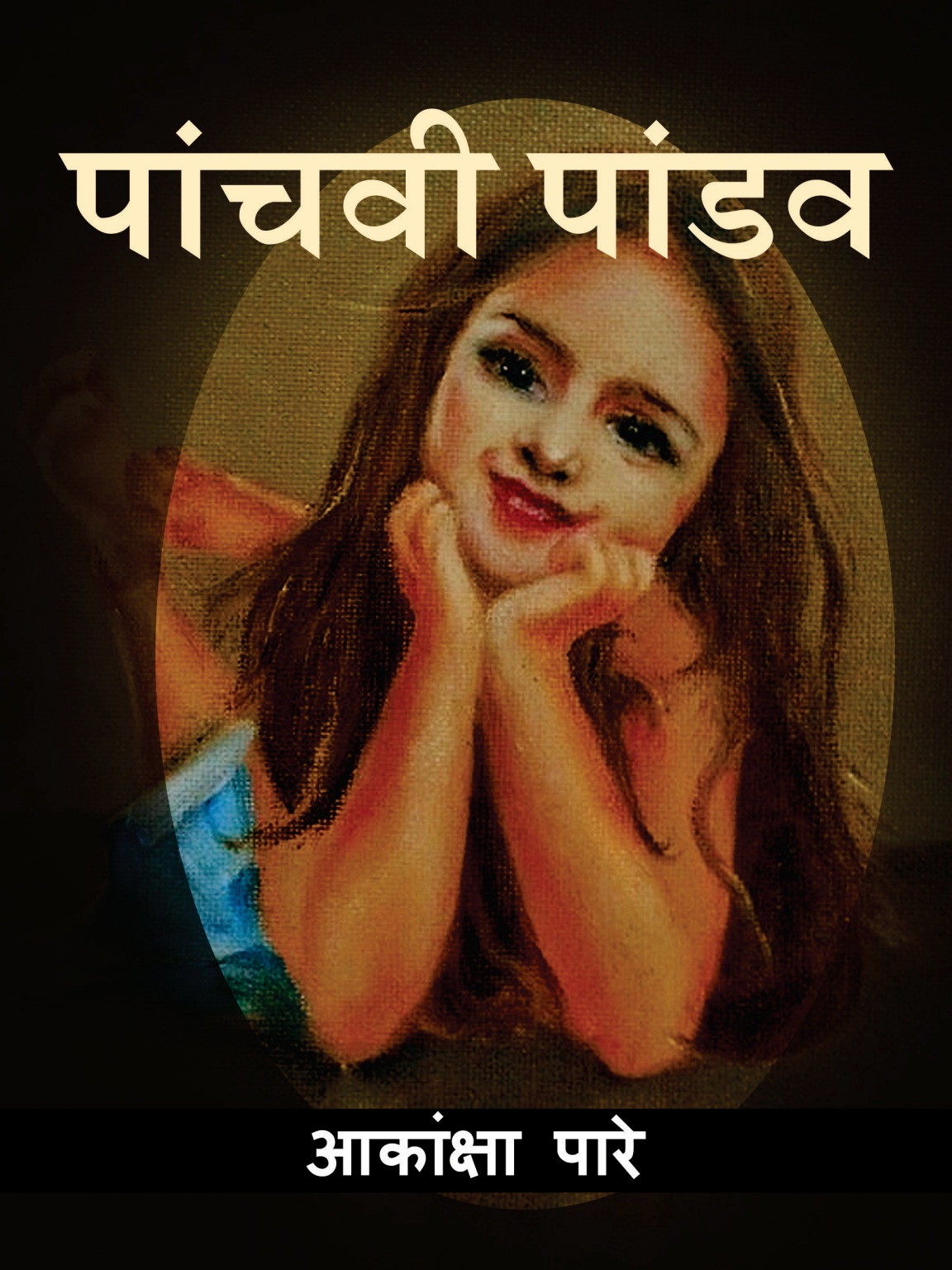

आकांक्षा पारे

पांचवी पांडव

लड़की वैसी ही जन्मी थी, जैसे लड़के जन्मते हैं। नौ महीने कोख में रहने के बाद एक दिन मां की चीखती-चिल्लाती आवाज के बीच टप्प से टपक पड़ी थी वह दाई की हथेली पर। जन्म लेने से पहले वह गर्भ से ज्यादा गर्व का हिस्सा थी। चार पूतों वाली उसकी जननी पांच की संख्या के लिए बेताब थी। जब वह अपने घड़े से पेट पर हाथ फेरती, उसे लगता पांचवा पांडव उसकी कोख में अठखेलियां कर रहा है। पांचवे पांडव से उसका मतलब यह नहीं था कि वह कुंती बनने के लिए बेताब थी। वह तो बस अपनी सास की बराबरी करना चाहती थी। पांच पूतों के घमंड में शामिल होने के लिए वह बैचेन थी। 'लगातार पांच बेटे जनना कोई हंसी-खेल नहीं है' सास की इस गर्वोक्ति का उसे जवाब देना था। फिर किसी दिन हौले से उसे सास को याद दिलाना था उस चंद्रहार के बारे में, जो पांच पूतों वाली के ही नसीब में था। झिलमिलाता चंद्रहार। जान बसती थी उस हार में लड़की की मां की। एक वही है जो चार बेटे के साथ चंद्रहार की दौड़ में सबसे आगे है। उसकी तीन बड़ी जेठानियां और एक देवरानी तो उस हार के बारे में सोच ही नहीं सकती थीं। एक बांझ, दूसरी सिर्फ एक लंगड़े लड़के की मां, तीसरी तीन लड़कियों को 'जन कर' सिधार गई और बाप साधू हो गया। अब कौन जाने तीनों अपने ननिहाल में कौन गत से रहती हैं। सुनने में तो आया सबसे बड़ी कहीं किसी के साथ कच्ची उम्र में ही निकल गई। बाकी दो की स्थिति घर की नौकरानी से भी बुरी है। पर 'लड़की जात' पर दया दिखाने का रिवाज हो तब तो कोई उनके बारे में सोचे। बची सबसे छोटी 'सहरातन' देवरानी। जिसके माथे पर ही हमेशा 'हम दो, हमारे दो' का लाल तिकोन दिखता रहता है। 'तो बचा कौन?' उसका मन हमेशा उससे खुद सवाल-जवाब करता रहता था।

.....

लड़की जब से समझदार हुई है, तब से दादी के मुंह से सुनती आ रही थी, 'कोई कुछ भी कहे, लेकिन लड़की जनना कोई अच्छी बात नहीं है, मेरे तो भैया एक लड़की न हुई। हुए तो सब लड़के है। यह वाक्य वह दिन में इतनी बार सुनती है कि कभी-कभी उसे नींद में भी लगता है कि वही

बोल उसके कानों से टकरा रहे हैं। उसकी मां के बोल तो उसने कम ही सुने हैं घर में। कभी-कभी उसे मां गूंगी लगती है। वह घर के काम की निगरानी के अलावा अपने 'बेटों' पर ध्यान लगाने के सिवाय और कुछ नहीं करती। दादी व्यंग्य में देख उसे 'पांडवी' कहती है, 'पांचवी पांडवी!' खाट पर बैठ कर जब उन्हें मां पर गुस्सा निकालना होता है। गर्व के प्रतीक पांडव बेचारे उसकी वजह से चार की संख्या पर ही सिमट कर रह गए। दुर्योधन की सेना को धूल चटा कर विजय पाने वाले पांडव। पिता को भी यह अफसोस कम न था। कोई यदि चार बेटो की याद दिला 'राजा दशरथ' की उपाधि देता तो दादी उसकी सात पुश्तें ऐसे तारतीं कि अगली बार रामायण पढ़ते वक्त भी राजा दशरथ नाम लेने से उसकी रूह कांप जाती। 'अरे कलमुंहे राजा दसरथ को कोई सुख न मिला अपने बेटों से। अरे करमजले काहे मेरे लड़के को राजा दसरथ के रओ। आग लगे तेरे मुंह में' के वाक्य लंबे समय तक हवा में तैरते रहते।

कभी जब लड़की कमरे या रसोई की देहरी पर छुपकर आती आवाजें सुनती तो वह उसे दूसरी दुनिया की आवाज लगती। उसकी गूंगी मां की आवाज जो सिर्फ उस खास कमरे में आती थी, जहां उसका जाना लगभग वर्जित था। दरवाजे की ओट में वह सुनती, 'राजा बेटा खा ले,' 'मोहन दूध पिएगा कि मिठाई खाएगा,' 'बब्बू रबड़ी कल जरूर मंगवाऊंगी।' यह वाक्य उसे किसी स्वप्नलोक के लगते थे। उसने मां की आवाज ही बहुत कम सुनी थी, ऐसे वाक्य तो उसकी कल्पना से भी परे थे। वह यकीन ही नहीं कर पाती थी कि यह उसी औरत की आवाज है, जिसे वह भी मां कहती है। उसे हमेशा लगता था कि कोई और औरत आ कर उसके भाइयों को दुलार जाती है। शायद कोई जादूगरनी, शायद कोई परी, शायद बरगद के नीचे रहने वाली बुढ़िया।

.....

'लड़कियां घूरे की तरह बढ़ती हैं' इसलिए वह घूरे की तरह ही पल कर बड़ी होती रही। लड़की के भाई उससे स्नेह तो रखते, लेकिन उनकी अपनी दुनिया थी, जिसमें लड़की के लिए जगह पहले कम और बाद में खत्म हो गई। एक रात जलती देह के साथ उसे जबान सूखती महसूस हुई। उसने लोटे की तरह हाथ बढ़ा दिया। टन्न की तीन आवाज के साथ लोटे ने ऐसी गुलाटी खाई जैसे वह बचपन में दूर खड़ी हो कर भाई को गुलाटी खाते देखती रहती थी। पानी ने फैल कर फर्श पर अपना कारोबार जमाया वहां तक तो ठीक था, लेकिन पानी के चक्कर में असली मुरादाबादी